अंतरा-शब्दशक्ति

कुछ दिल से

काव्य संग्रह

नेहा चाचरा बहल

कुछ दिल से...

(काव्य संग्रह)

नेहा चाचरा बहल

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-62-9

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © नेहा चाचरा बहल

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'Kuch Dil Se...' by 'Neha Chachra Bahal'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत : प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं

भूमिका

विद्‌यालय के समय से ही गुरु जनों से व अपने पिताजी श्री दिलीप कुमार चाचरा जी से प्रेरणा प्राप्त कर कुछ कुछ लेखन से जुड़ने लगी।विद्‌यालय के दौरान विद्‌यालय पत्रिका एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के अंतर्गत स्व रचित निबन्ध, कविताओं व गीतों से जुड़ी रही हूँ। हिंदी में इतनी रुचि होना भी मेरे पिताजी व मेरी अध्यापिका सुश्री डॉ नीति शास्त्री एवं श्री आर सी वर्मा (मेरे कला के शिक्षक)का भी अप्रत्यक्ष योगदान रहा है। प्रारम्भ से ही नीति मैम की भाषा और वर्मा सर की कविताओं से सदा से ही बहुत कुछ सीखती रही हूँ। पुस्तक का नाम 'कुछ दिल से....' रखने के पीछे भी यही कारण है कि इसमें दी प्रत्येक रचना मेरे दिल से व मेरी भावनाओं से सीधे तौर से सम्बन्धित हैं।

इसमें लिखी सभी रचनाएँ परिस्थितियों के आधार पर ही रचित हैं अर्थात किसी के लिए भी विशेष समय निकाल के नहीं लिखा है अपितु जो जिस समय चल रहा है बस उसे महसूस कर के दिल से जो भी निकला वो आपके समक्ष इस पुस्तक के माध्यम से पेश किया है।

अतः आशा है कि आप भी इसे कुछ दिल से ही पढ़ेंगे।

धन्यवाद

नेहा चाचरा बहल

अनुक्रमणिका

1. बेकरार	5
2. कसम	6
3. मुझे खबर है	7
4. सेवा	8
5. माँ सबसे खूबसूरत है	9
6. तिरंगा	10
7. झांसी की रानी	11
8. पहचान	12
9. अब न कहीं जाना है	13
10.ये प्यार ही तो है	14
11.तेरे लिये	15
12.इंसान	16

बेकरार

बेक़रार इस तरह न खुद को आप कीजिये,
इश्क़ के जज़्बातों को न आप तूल दीजिये,

सुनो दुनिया में आशिक़ी यूँ सबके बस की नहीं
राह ए उल्फ़त में ज़रा बच के भाग लीजिये,

तुम्हारी चाहतों का भी दौर यहाँ आएगा
राज़ ए मुहब्बत आप सबको नही दीजिये,

बढ़े जो धड़कने दिल की किसी की यादों में
उसकी ख़ातिर खुदा से आप दुआ कीजिये,

किसी को चाहते रहना भी एक बंदगी है
यूँ मुहब्बत को अपने दिल में बढ़ने दीजिये,

के लोग लिखते हैं यहाँ वफ़ा के गीतों को
गज़ल नेहा की कोई आप भी पढ़ लीजिये,..

कसम

हमारी कब्र पे आकर के मुस्कुरा देना,
ये तंज है या अदा है हमें बता देना,..

हो झूठे ही सही दो आंसू तुम बहा देना,
मगर कसम है तुझको मुझको न भुला देना,..

यूँ प्यार करने की तू मुझको न सजा देना,
दास्ताने इश्क की मेरे न गुनगुना देना,..

मैं गहरी नींद में सोयी हूँ तुम जगा देना,
मेरे लिये भी दिल में कोना इक बना देना,..

कोई पूछे मेरे बारे में तो इक पता देना,
रख दिल पे हाथ नेहा कहके मुस्कुरा देना,...

मुझे खबर है

यूँ मुस्कुरा के जब करीब मेरे आते हो,
दिल के सोये हुए तारों को छेड़ जाते हो.

झुका के नज़रों को जब पलकों को उठाते हो,
हज़ारों शोखियां उस पल में तुम लुटाते हो.

कि इन निगाहों के जब तीर तुम चलाते हो,
कितनी मासूमियत से दिल को चीर जाते हो.

हंसी अदाओं से किस किस का दिल चुराते हो,
ये सादगी बताओ तुम कहाँ से लाते हो.

न जाने क्यों मगर मुझे ही तुम सताते हो,
साथ फुरस्त के दो पल भी न बिताते हो.

सजी महफिल में तो तुम साथ खिलखिलाते हो,
रहूँ मैं तन्हा तो नज़दीक भी न आते हो.

मुझे खबर है दूर तुम भी न रह पाते हो,
तभी तो नेहा की गज़लों को गुनगुनाते हो,....

सेवा

वीर शहीदों के चरणो में अपना शीश झुकाऊँ मैं,
अपनी भारत माता पर भी वारी वारी जाऊँ मैं.
यूँ तो मैं अभी छोटा हूँ पर जब बड़ा हो जाऊँ मैं,
वतन परस्ती की राहों में आगे ही बढ़ता जाऊँ मैं.

ऐसा कुछ अरमान है मेरा प्यार ही प्यार लुटाऊँ मैं,
बन जाऊँ मैं इस काबिल गुलशन गुलशन महकाऊँ मैं .
कर के वंदन गुरूजनो का ,ऐसा ही वर पाऊँ मैं ,
भारत की पावन धरती पर अपना सर्वस्व मिटाऊँ मैं .

मात पिता की सेवा कर के जीवन सफल बनाऊँ मैं,
अच्छाई के रास्तों में आगे को बढ़ता जाऊँ मैं.
बचपन को सही दिशा मिले तो सपने सच कर जाऊँ मैं ,
माता पिता गुरुजनों देश का नेहा सम्मान बढ़ाऊँ मैं,.........

माँ सबसे खूबसूरत है

प्रेम की वो मूरत है
ममतामयी जो सूरत है
हर शख्स की ज़रूरत है
माँ सबसे खूबसूरत है

ज़िसको माँ का यहां प्यार मिले
मानो सारा संसार मिले
माँ के आँचल की छाया में
हम जैसे कई फूल खिलें

पापा की जो बात करूं तो
नहीं मिलता उनको आराम
हम सबको कोई कमी नहीं हो
इसलिये करते रहते काम

प्यार दुलार पापा का अनोखा
लाकर देते सबको तोहफा
सुबह सवेरे दफतर जाते
शाम को आ हमें गले लगाते

मम्मी पापा की बाहों में तो
हर बच्चे को ही स्वर्ग मिले
वो हैं तो दुनिया गुलशन है
'नेहा' ये घर परिवार खिले

तिरंगा

दिल में बसता है तिरंगा, होंठो पर मुस्कान है ,
हे माँ भारत सबसे पहले तुझको ही प्रणाम है.

तू है भाग्य विधाता माता तू हमारी जान है,
लहर लहर लहराते तिरंगे से तेरी पहचान है.
तेरी खातिर बलि बलि जाते आ आ आ आ
तेरे वीर जवान हैं
हे माँ भारत सबसे पहले तुझको ही प्रणाम है

तेरे गीतों को गा गा कर तेरी महिमा गाते हैं
आजादी गणतंत्र दिवस को मिलकर साथ मनाते हैं
तेरे आँचल की छाया में आ आ आ आ
पूरा हिन्दोस्तान है
हे माँ भारत सबसे पहले तुझको ही प्रणाम है

रंग बिरंगे फूलों से माँ गुल तेरा महकता है
अलग अलग भाषा बोली से आंगन ये चहकता है
भिन्न भिन्न परिवेशों से नेहा आ आ आ आ
भारत माँ की शान है
हे माँ भारत सबसे पहले तुझको ही प्रणाम है

झांसी की रानी

महारानी के चरणो में मैं श्रद्धा सुमन चढ़ाती हूँ,
मर्दानी का वन्दन कर शत शत शीश झुकाती हूँ.

लक्ष्मी रूपी स्वयं जगदम्बा, बदल सवारी आयी थी,
भारत में वही देश प्रेम की फिर चिंगारी लायी थी.
काल बनी थी दुश्मन का जो
उसका गुण मैं गाती हूँ,
मर्दानी का वन्दन कर शत शत शीश झुकाती हूँ

बरछी, ढ़ाल, कृपाण, कटारी उसके मन को भाते थे,
शत्रू ज़िसका नाम सुनते ही खौफ से थर्राते थे.
अश्व चढ़ी रण चंडी की महिमा
लिख कर भी लिख न पाती हूँ,
मर्दानी का वन्दन कर शत शत शीश झुकाती हूँ

झांसी की रानी की याद में जन जन दीप जलाता है,
उनके साहस की गाथायें बच्चों को बतलाता है.
अमर रहे यह रीत झांसी की
मैं नेहा दुआ मनाती हूँ,
मर्दानी का वन्दन कर शत शत शीश झुकाती हूँ

पहचान

बारिशों की बूँदें बरसने लगी,
तुमसे मिलने को फिर मैं तरसने लगी,

इन हवाओं ने छेड़ा, मुझे आज फिर,
तेरी खुशबु से मैं फिर महकने लगी

प्यार में ही तुम्हारे गुमसुम हूँ मैं,
तेरी चाहत में फिर मैं सवरने लगी.

रंग मेरा निखरने लगा और भी,
तेरे साय में जबसे मैं चलने लगी

इश्क़ तेरा तो नेहा की पहचान है
तेरी खातिर हदों से गुजरने लगी.

अब न कहीं जाना है

तुझमे रब को हमने देखा तुझको रब माना है
छोड़ के तेरा दामन सजनी अब न कहीं जाना है
अब न कहीं जाना है

तुझे देखकर मेरी सुबह खिले
तेरे संग जीवन की साँझ ढले
जब भी चलें तेरे साथ चलें
तुझको अपना मान लिया है जबसे तुझको जाना है
छोड़ के तेरा दामन सजनी अब न कहीं जाना है

अब न कहीं जाना है
जो तुम मिल गये मुझको सब मिल गया
मैं दुनिया को कह दूँ मुझको रब मिल गया
तेरा नूर देखकर ये जग जल गया
तेरे बिना इक पल न गुज़रे मैने ये ठाना है
छोड़ के तेरा दामन सजनी अब न कहीं जाना है

अब न कहीं जाना है
मेरी धड़कनो पे है राज तेरा
मेरे दिल में बजता है साज तेरा
तू ही मन का गीत तू है मीत मेरा
'नेहा' दिल में शोर मचा है सिर्फ तुझे पाना है
छोड़ के तेरा दामन सजनी अब न कहीं जाना है

ये प्यार ही तो है

ये प्यार ही तो है जो बेकरार करता है,
मेरा दिल अब भी तुझपे ऐतबार करता है.

कितना चाहूँ मैं तुझे ये बताना मुश्किल है,
दिल तो हर ख्वाब में दीदारे यार करता है.

हसरतें ये दिल की आज मेरे बस में नहीं ,
दिल तुझे मिलने की कोशिश हज़ार करता है..

दरमिया हमारे देखो दूरियां बहुत हैं,
मेरा दिल फिर भी तुझपे जान निसार करता है.

नेहा नाकाम है तुझसे मिल नहीं पाती ,
रूबरू हम मिलें दिल इंतज़ार करता है.

तेरे लिये

जले थे तेरे लिये हम सुलगते आज भी हैं,
तेरी यादों के शोलों से दहकते आज भी हैं .

जहाँ मिलते थे हमसे तुम छुप के रातों में ,
उन्हीं रस्तों से सनम हम निकलते आज भी हैं .

अब जो छेड़ा है तुमने फ़िर से दिल के तारों को,
प्यार की ताल पर कदम थिरकते आज भी हैं .

तेरी तस्वीर को दिल में बसा के रक्खा है,
तुम्हारी चाहतों में हम मचलते आज भी हैं.

खुदा का शुक्र है जो तूने नेहा याद किया,
हम तो दीदार के लिये तड़पते आज भी हैं .

इंसान

अगर देखा जाए तो इंसान तो हैं
पर इंसानियत खत्म हो गयी है,
क्योंकि ख़ुदा तो है सभी का
लेकिन बंदगी खत्म हो गयी है,
अब हादसा हो सड़क पे
तो रुकते नहीं हैं लोग,
बस मोबाइल पकड़ लेते हैं,
अब इंसान जैसे जहां में दिखते नहीं हैं लोग।।
पहले इंसान था तो भगवान भी था दुनिया में,
अब खुदाई भी रूसी रूसी सी लगती है,
इंसानियत छोड़ आदमी
अब बाज बनता जा रहा,
अब तो इंसान ही इंसान को नोचने लगा है
दबोचने लगा है।
इंसानियत तो जैसे
किस्से कहानियों की बाते हो गयीं,
तभी तो बेटे बेटियों के साथ
बूढ़ी औरतें भी बलात्कार की मारी हो गई।।
खुद को इंसान कहने में कुछ तो शर्म करो,
इंसान हो तो इंसान जैसे कुछ तो 'नेहा' कर्म करो।।।।।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - नेहा चाचरा बहल

जन्म - 11.02.1998

शिक्षा - एन.टी.टी., बी.कॉम, एम.कॉम, एम.ए. (हिन्दी)
बी.एड., प्रभाकर (गायन)
सी.सी.सी. डी.टी.पी., सी.आई.ए इन कम्प्यूटर एप्लिकेशन

पता - 605, ईसाई टोला, कमलसिंह कॉलोनी, प्रेम नगर झांसी, उ.प्र. - 284003

कार्यक्षेत्र - सहायक प्रबंधक (मानव कल्याण विकास वादी संस्थान)

विधा - गीत, गज़ल, भजन, देशभक्ति, कविता, पंजाबी, टप्पे ।

प्रकाशन - बुंदेलखंड की कवियत्रियाँ, दुल्हन, अभियान टुडे, आकाशवाणी झांसी एवं छतरपुर में भी गज़ल पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त है। दैनिक जागरण, जन सेवा मेल, अमर उजाला आदि समाचार पत्रों मे भी रचनाओं को स्थान प्राप्त हुआ है।

सम्मान - विद्यावाचस्पति की मानद उपाधि प्राप्त (प्रतापगढ़ यूनिवर्सिटी)

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
978-93-88102-62-9
मूल्य 40/-
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com